

65. बुद्धि है [CTET-Feb.-2016-I]

- (a) एक विशिष्ट योग्यता
(b) सामर्थ्यों का एक समुच्चय
(c) एक अकेला और जातीय विचार
(d) दूसरों को अनुकरण करने की योग्यता

66. हॉवर्ड गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धांत सुझाता है कि: [CTET-Sep.-2016-I]

- (a) हर बच्चे को प्रत्येक विषय आठ भिन्न तरीकों से पढ़ाया जाना चाहिए ताकि सभी बुद्धियाँ विकसित हों
(b) बुद्धि को केवल बुद्धिबल (IQ) परीक्षा से ही निर्धारित किया जा सकता है
(c) शिक्षक को चाहिए कि विषयवस्तु को वैकल्पिक विधियों से पढ़ाने के लिए बहुबुद्धियों को एक रूपरेखा की तरह ग्रहण करें
(d) क्षमता भाग्य है और एक अवधि के भीतर नहीं बदलती

67. प्रतिभावशाली बच्चों के लिए सबसे अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम वे होते हैं जो: [CTET-Sept.-2016-II]

- (a) उनके आक्रामक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं
(b) उन्हें अधिगम के न्यूनतम मानकों तक काम करने को प्रेरित करने के लिए उपहारों और पुरस्कारों का उपयोग करते हैं
(c) प्रत्यास्मरण के द्वारा ज्ञान की प्रवीणता पर बल देते हैं
(d) उनके चिंतन को प्रेरित कर उन्हें विविध विचारों में व्यस्त रहने के अवसर देते हैं

68. हॉवर्ड गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

[CTET-Sept.-2016-II]

बुद्धि का प्रकार अंत अवस्था

- (a) संगीतात्मक (i) चिकित्सक
(b) भाषिक (ii) कवि
(c) अंतराव्ययविकल (iii) खिलाड़ी
(d) स्थानिक (iv) वायलिन-वादक
(v) मूर्तिकार

- (a) a b c d
iv ii v iii
(b) a b c d
v ii iv i
(c) a b c d
ii iv v
(d) a b c d
iv ii i v

69. किस बुद्धिलब्धि स्तर का बालक सामान्य बुद्धि वाला कहलाता है? [HTET-2017]

- (a) 70-79 (b) 80-89
(c) 90-109 (d) 110-119

70. बुद्धि लब्धि निकालने का सूत्र है [UPTET-2017]

- (a) मानसिक आयु × वास्तविक आयु
वास्तविक आयु
(b) मानसिक आयु
मानसिक आयु
(c) मानसिक आयु × 100
वास्तविक आयु

(d) वास्तविक आयु + मानसिक आयु

71. बुद्धि के तरल क्रिस्टलीय प्रतिमान के प्रतिपादक कौन थे? [UPTET-2017]

- (a) कैटेल (b) थॉर्नडाइक
(c) वर्नन (d) स्किनर

72. शिक्षण हेतु मानसिक उद्बलन प्रतिमान का प्रयोग निम्न में से किसके सुधार हेतु किया जाता है? [UPTET-2017]

- (a) समझ (b) अनुप्रयोग
(c) सृजनात्मकता (d) समस्या समाधान

73. 'स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण' मापन करता है [UPTET-2017]

- (a) व्यक्तित्व का
(b) पढ़ने की दक्षता का
(c) बुद्धि का
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

74. बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया? [UPTET-2017]

- (a) थॉर्नडाइक (b) स्पीयरमैन
(c) वर्नन (d) स्टर्न

उत्तरमाला

1	(d)	12	(d)	23	(b)	34	(d)	45	(b)	56	(d)	67	(d)
2	(b)	13	(a)	24	(c)	35	(d)	46	(a)	57	(a)	68	(d)
3	(a)	14	(c)	25	(a)	36	(d)	47	(b)	58	(b)	69	(c)
4	(b)	15	(a)	26	(a)	37	(d)	48	(a)	59	(d)	70	(c)
5	(b)	16	(c)	27	(a)	38	(c)	49	(c)	60	(d)	71	(a)
6	(c)	17	(b)	28	(a)	39	(a)	50	(d)	61	(b)	72	(c)
7	(a)	18	(c)	29	(d)	40	(c)	51	(a)	62	(d)	73	(c)
8	(b)	19	(b)	30	(c)	41	(c)	52	(c)	63	(c)	74	(b)
9	(b)	20	(c)	31	(d)	42	(d)	53	(c)	64	(a)		
10	(b)	21	(a)	32	(c)	43	(a)	54	(c)	65	(b)		
11	(d)	22	(b)	33	(d)	44	(b)	55	(c)	66	(c)		

व्याख्या सहित उत्तर

9. (b) गार्डनर के बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार पशुओं, खनिजों, पेड़-पौधों आदि प्राकृतिक तत्वों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता प्राकृतिक बुद्धि कहलाती है।
10. (b) बुद्धि के क्षिरण सिद्धांत के अनुसार, लगभग 70% व्यक्तियों की बुद्धि-लब्धि 90-110 के मध्य, लगभग 15% व्यक्तियों की बुद्धि 110 से अधिक तथा लगभग 15% व्यक्तियों की बुद्धि 90 से कम होती है।
12. (d) बहुबुद्धि सिद्धांत हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner) ने 1983 में 'फ्रेम ऑफ माइंड' पुस्तक में दी। यह सिद्धांत विकल्पों (a), (b) और (c) तीनों की विशेषतायें बतलाता है, परंतु (d) नहीं।
13. (a) वास्तविक आयु = 16 वर्ष
बुद्धि-लब्धि = 75
मानसिक आयु = ?
मान मानसिक आयु = x.
- $$\text{बुद्धि - लब्धि (IQ)} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100, \quad 75 = \frac{x}{16} \times 100, \quad x = \frac{75 \times 16}{100} = 12 \text{ वर्ष}$$
16. (c) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रेसिस एक अशाब्दिक समूह बुद्धि-परीक्षण है, जो 5 वर्ष से ऊपर के लिये है। इसमें 60 बहुविकल्पीय प्रश्न होते हैं।
19. (b) स्टेनबर्ग ने बुद्धि के तीन आयाम बताए हैं जिसे त्रितंत्र सिद्धांत के नाम से जाना जाता है, जो निम्नलिखित हैं-
- अवयवी बुद्धि (Componential Intelligence)
 - अनुभविक बुद्धि (Experiential Intelligence)
 - संदर्भगत बुद्धि (Contextual Intelligence)
20. (c) हावर्ड गार्डनर ने बहुबुद्धि के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। बहुबुद्धि सिद्धांत प्रत्येक व्यक्ति को विलक्षण योग्यताओं पर बल देता है। गार्डनर के अनुसार, बुद्धि के आठ प्रकार पाए जाते हैं जिनमें भाषायी, तर्क गणितीय, संगीत, स्थानिक, शारीरिक/गति संवेदी, अंतर्व्यक्तिगत (Interperson), आंतरव्यक्तिगत (Intrapersonal) एवं प्राकृतिक बुद्धि शामिल हैं।
21. (a) हावर्ड गार्डनर द्वारा दिए गए बहुबुद्धि सिद्धांत की आलोचना मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा किया गया। आलोचकों के अनुसार गार्डनर द्वारा दी गयी बुद्धि की परिभाषा व्यापक है। गार्डनर के अनुसार, बुद्धि के आठ प्रकार मात्र प्रतिभा, व्यक्तित्व, लक्षण और क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। गार्डनर के सिद्धांत में अनुभवजन्य साक्ष्यों की कमी है।

22. (b) करनैल सिंह, कोहलबर्ग के नैतिक विकास के पश्च-परंपरागत अवस्था के सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार के स्तर में है। इस स्तर पर भिन्न मूल्यों, विचारों और अन्य लोगों पर विश्वास, करते हैं लेकिन कानून के नियम बनाने से पहले समाज के सदस्यों को कानूनी मानकों पर सहमत होना चाहिए।
60. (d) अपसारी चिन्तन सृजनात्मकता से सम्बन्धित है, इस चिन्तन के अन्दर व्यक्ति को कुछ तथ्य तो दिए होते हैं उनमें अपनी ओर से एक तथ्य जोड़कर निष्कर्ष निकाला जाता है।
61. (b) जिन लोगों के पास उच्च संगीतीय बुद्धिमत्ता होती है उनकी पिछ सामान्य तथा अच्छी होती है। वे लोग गाने, संगीत उपकरणों को बजाने एवं संगीत की रचना करने में समर्थ होते हैं।
62. (d) सृजनात्मकता संसार को नए तरीके से समझने, गुप्त पद्धति को समझने, असंबद्ध घटना को समझने एवं समाधान को प्रस्तुत करने के बीच संबंध स्थापित करता है।
63. (c) कुछ प्रश्न विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे अपनी व्यक्तिगत रायों को विभिन्न मामलों में प्रदर्शित कर सकें। वे जब इसके लिए कारण देते हैं तो विश्लेषणात्मक एवं सीमांत तार्किकता को प्रोत्साहित करते हैं।
64. (a) बुद्धि को इनके विभिन्न तरीकों में परिभाषित किया गया है। इसमें तार्किक शक्ति, विचारण समझ, सजगता, संवाद, अधिगम, भावनात्मक ज्ञान, स्मरण योजना, रचनात्मकता एवं समस्या को हल करना सम्मिलित है। यह कई पहलुओं से युक्त बहुआयामी होती है।
66. (c) बहुबुद्धि सिद्धान्त का सर्वप्रथम प्रतिपादन हॉवर्ड गार्डनर ने अपनी पुस्तक 'फ्रेमस ऑफ माइन्ड' (1983) में किया। हॉवर्ड के अनुसार सभी में सात बौद्धिक क्षमताएं होती हैं जो कि निम्न है-
(i) तार्किक गणितीय, (ii) शब्दिक-भाषायी, (iii) स्थानिक-यांत्रिकी, (iv) संगीतमय, (v) शारीरिक-गतिबोधन (vi) अन्तर व्यक्तिगत सामाजिक (vii) अन्तर व्यक्तिगत स्वः ज्ञान
67. (d) प्रतिभाशाली बच्चे असाधारण योग्यता या बुद्धि से सम्पन्न होते हैं, यदि प्रतिभाशाली बच्चों को व्यस्त न रखा जाए तो कक्षा व स्कूल के प्रति धीरे-धीरे उनमें उदासीनता आ जाती है। अतएव शैक्षिक कार्यक्रम प्रतिभाशाली बच्चों के अनुरूप होना चाहिए।
68. (d) बहुबुद्धि सिद्धान्त हॉवर्ड गार्डनर द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उनके अनुसार, बुद्धि कोई एक तत्व नहीं है बल्कि कई भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धियों का अस्तित्व होता है। प्रत्येक बुद्धि एक दूसरे से स्वतंत्र रहकर कार्य करती है।



69. (c) बुद्धि लब्धि का प्रत्यय टर्मन तथा स्टर्न ने दिया।

बुद्धिलब्धि वितरण

बुद्धिलब्धि सीमाएँ	वर्ग
130 से अधिक	प्रतिभाशाली
121 से 130	प्रखर बुद्धि
111 से 120	तीव्र बुद्धि
91 से 110	सामान्य बुद्धि
81 से 90	मन्द बुद्धि
71 से 80	अल्प बुद्धि
71 से कम	जड़ बुद्धि

70. (c) बुद्धि लब्धि, बालक की सामान्य योग्यता के विकास की गति बताती है। यह कई अलग मानकीकृत परीक्षणों से प्राप्त एक गणना है, जिससे बुद्धि का आकलन किया जाता है।
71. (a) बुद्धि के तरल क्रिस्टलीय प्रतिमान का प्रतिपादन रेमंड कैटल द्वारा किया गया था जिसका विस्तार बाद में उनके शिष्य जॉन एल हार्न द्वारा किया गया।
73. (c) सन् 1905 में बिने ने साईमन के सहयोग से प्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया। 1916 में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक टर्मन ने बिने के बुद्धि परीक्षण को अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल बनाकर इसका प्रकाशन किया। यह परीक्षण स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण कहलाता है।
74. (b) स्पीयरमैन ने 1904 में बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त का वर्णन किया। उनका अनुसार बुद्धि में दो प्रकार के कारक होता है। बुद्धि की संरचना में एक कारक सामान्य तत्व होता है जिसे (G-factor) और दूसरा विशिष्ट कारक (S-factor) कहा जाता है।

अभ्यास - 2

1. 60 मिनट में आपको 60 प्रश्नों के उत्तर देने हैं, आप कितने अधिक-से-अधिक प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ, ये बुद्धि परीक्षण हैं-
 - (a) शक्ति बुद्धि परीक्षण
 - (b) गति बुद्धि परीक्षण
 - (c) शब्दिक बुद्धि परीक्षण
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
2. बुद्धि के विषय में सत्य है-
 - (a) बुद्धि एक जन्मजात योग्यता है।
 - (b) बुद्धि व्यक्ति को अमूर्त चिन्तन योग्य बनाती है
 - (c) बुद्धि वंशानुक्रम व वातावरण से प्रभावित है
 - (d) उपरोक्त सभी।
3. एक बालक यंत्रों व मशीनों में रुचि लेता है। अपनी खिलौना कार को खोलकर देखता है, उसके अन्दर बुद्धि का कौन सा-प्रकार विद्यमान है?
 - (a) मूर्त बुद्धि
 - (b) सामाजिक बुद्धि
 - (c) अमूर्त बुद्धि
 - (d) इनमें से कोई नहीं
4. वर्तमान समय में बुद्धि का मापन क्यों आवश्यक है?
 - (a) पिछड़े बालकों के चुनाव हेतु
 - (b) भावी सफलता के ज्ञान हेतु
 - (c) बालकों के वर्गीकरण हेतु
 - (d) उपरोक्त सभी।
5. माना जाता है कि (I.Q.) बुद्धि लब्धि का प्रत्यय इन्होंने दिया-
 - (a) टर्मेन ने
 - (b) जड ने
 - (c) कैटेल ने
 - (d) थार्नडाइक ने।
6. I.Q. का सूत्र है-
 - (a) $\frac{M.A.}{C.A.} \times 100$
 - (b) $\frac{C.A.}{M.A.} \times 100$
 - (c) $\frac{E.A.}{C.A.} \times 100$
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
7. कक्षा में एक बालक अपने साथियों की अपेक्षा हर पाठ को सबसे तौब्रता से पढ़ता व समझता है, समस्या समाधान अद्वितीय तरीके से करता है इसकी संभावित I.Q. होगी-
 - (a) 140 से अधिक
 - (b) 81-90
 - (c) 91-110
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
8. कक्षा में सामान्य उपलब्धि वाला बालक किसकी बुद्धि-लब्धि औसत है उसकी I.Q. है-
 - (a) 91 से 110
 - (b) 71-80
 - (c) 111-120
 - (d) 71 से कम
9. बुद्धि परीक्षण का निर्माण करने वाला पहला मनोवैज्ञानिक था-
 - (a) अल्फर्ड विने
 - (b) रैमण्ड कैटेल
 - (c) साइमन
 - (d) जी.बी. वाटसन।
10. जहाँ प्रश्नों का स्वरूप शब्दों में हो वह बुद्धि परीक्षण इस प्रकार का होगा-
 - (a) शब्दिक बुद्धि परीक्षण
 - (b) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
 - (c) गति बुद्धि परीक्षण
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
11. बुद्धि सिर्फ एक सामान्य तत्व से निर्मित है, यह कहा-
 - (a) चार्ल्स स्पीयर मैन ने
 - (b) ई.एल. थार्नडाइक
 - (c) एविंगहास ने
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
12. शक्ति बुद्धि परीक्षण की विशेषता है
 - (a) प्रश्नों का कठिनाई स्तर सामान्य
 - (b) प्रश्नों का कठिनाई स्तर बढ़ता जाता है
 - (c) बुद्धि का सम्बंध प्रश्नों को हल करने की गति है
 - (d) उपरोक्त सभी।
13. 'आर्मी अल्फा परीक्षण' एक परीक्षण है-
 - (a) शब्दिक सामूहिक
 - (b) अशाब्दिक व्यक्तिगत
 - (c) शब्दिक व्यक्तिगत
 - (d) अशाब्दिक सामूहिक।
14. शब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण है-
 - (a) शब्दों द्वारा एक व्यक्ति की परीक्षा
 - (b) चित्रों द्वारा एक व्यक्ति की परीक्षा
 - (c) शब्दों द्वारा समूह की परीक्षा
 - (d) उपरोक्त सभी।

15. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण की विशेषता नहीं-
 (a) पद या प्रश्नों के भाषा का प्रयोग
 (b) उत्तर भाषा के माध्यम से
 (c) पढ़ा-लिखा होना या भाषा का ज्ञान आवश्यक नहीं
 (d) इनमें से कोई नहीं-
16. सामूहिक बुद्धि परीक्षण की विशेषता है-
 (a) एक समय में अधिक लोगों की परीक्षा
 (b) बड़े बालकों व वयस्कों के लिए उपयुक्त
 (c) कम समय, कम धन की आवश्यकता
 (d) उपरोक्त सभी।
17. बुद्धि में सामान्य के साथ विशिष्ट तत्व भी होता है यह कहा-
 (a) अल्फर्ड विने (b) स्टर्न ने।
 (c) टर्मन ने (d) स्पीयरमैन ने।
18. नया अविष्कार, नया चिन्तन, नयी योजना इसी बुद्धि के सहारे होता है-
 (a) अमूर्त बुद्धि (b) मूर्त बुद्धि
 (c) गामक बुद्धि (d) उपरोक्त सभी।
19. गिलफोर्ड के बुद्धि संरचना प्रतिमान (Structure of Intellect Model) में आयाम है-
 (a) 3 (b) 5
 (c) 2 (d) 7
20. अपसारी चिन्तन योग्यता किस आयाम के अन्तर्गत आती है-
 (a) विषय-वस्तु (b) संचालन
 (c) उत्पादन (d) इनमें से कोई नहीं
21. निम्न योग्यता विषय-वस्तु से सम्बन्धित नहीं है-
 (a) आकारात्मक (b) प्रतीकात्मक
 (c) स्मृति (d) अर्थगत
22. धार्नडाइक के अनुसार-
 (a) बुद्धि अमूर्त है (b) बुद्धि मूर्त है
 (c) बुद्धि यान्त्रिक है (d) उपरोक्त सभी।
23. "बुद्धि सापेक्ष रूप में नवीन परिस्थितियों में अनुकूलन करने की जन्मजात योग्यता है" यह कथन है-
 (a) स्टर्न (b) विने
 (c) बर्ट (d) मैक्डगल।
24. एक खण्ड सिद्धान्त के समर्थक है-
 (a) विने, टर्मन, स्टर्न
 (b) विने, गैरेट, धार्नडाइक
 (c) टर्मन, कैटल, स्पीयरमैन
 (d) इनमें से कोई नहीं
25. स्टेनफोर्ड विने स्कूल का विकास किस देश में किया गया ?
 (a) अमेरिका (b) जापान
 (c) फ्रांस (d) जर्मनी।
26. भाटिया बैटरी परीक्षण में कुल कितने उपपरीक्षण-
 हैं ?
 (a) 2 (b) 3
 (c) 5 (d) 7
27. मानव मस्तिष्क की क्रियाओं का परीक्षण किस यंत्र से किया जाता है ?
 (a) जियुमोग्राफ
 (b) इलेक्ट्रोमियोग्राम
 (c) साइको गैलवनीमीटर
 (d) इलेक्ट्रो एन-सिफोलोग्राम

उत्तरमाला

1	(b)	6	(a)	11	(d)	16	(d)	21	(c)	26	(c)
2	(d)	7	(a)	12	(b)	17	(d)	22	(d)	27	(d)
3	(a)	8	(a)	13	(a)	18	(a)	23	(c)		
4	(b)	9	(a)	14	(a)	19	(a)	24			
5	(a)	10	(a)	15	(c)	20	(b)	25	(c)		

किसी भी समाज में रहने वाले सभी व्यक्ति उस समाज विशेष का ही भाग होते हैं। व्यक्ति तथा समाज, दोनों, एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। यदि व्यक्ति को समाज अनुरूप कार्य करना अपेक्षित है तो समाज भी व्यक्ति की क्षमता/अक्षमता से अछूता नहीं है। आधुनिक काल में शिक्षा के प्रसार तथा समाज के परिवर्तित होते मूल्यों के कारण एक नए दृष्टिकोण का उद्भव हो रहा है।

शिक्षा में अंतर्भेद, विषमता, वर्ग-भेद इत्यादि का कोई स्थान नहीं है। इसलिए शिक्षा को वर्ग-विशेष के चक्रव्यूह से बाहर निकाल कर सभी को समान समझते हुए समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व एवं न्याय के साथ अपने कर्तव्यों का निष्पादन करना होगा।

विभिन्न योग्यता वाले बालकों की सक्षमता का अधिकतम उपयोग आवश्यक है। इस कार्य हेतु समेकित शिक्षा प्रणाली द्वारा सामान्य विद्यालयों की कक्षा में, विभिन्न योग्यता वाले बालकों को समन्वित कर शिक्षण उपक्रम किए जाएँ। बालकों के अनुसार विद्यालय स्वयं में परिवर्तन करें ताकि बालकों को क्षमतानुसार अधिकाधिक विकास के अवसर सुलभ हों, उनमें आत्मविश्वास, आशा, कर्मठता तथा जीवन के प्रति आकर्षण का भाव जागृत हो तथा शिक्षा अपने मानवीय दायित्व के निर्वहन में सक्षम हो। जीवन को समाजोपयोगी बनाया जा सके।

आधुनिक समाज के बदलते जीवन-मूल्यों के फलस्वरूप आज विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी परिवर्तन हो रहे हैं। समेकित शिक्षा भी इसी प्रकार का नवीनतम तथा अति-महत्वपूर्ण प्रयास है। यह शिक्षा, विभिन्न योग्यता वाले बालकों के कल्याण के लिए क्रियात्मक पक्ष का विवेचन करती है। समेकित शिक्षा की अवधारणा का उद्भव शिक्षा-प्राप्ति के लिए समानता के अधिकार से हुआ है। सरकार द्वारा निःशक्त जन विधेयक-1995 समान अधिकार, अधिकार संरक्षण और पूर्ण सहभागिता के अन्तर्गत सम्मिलित शिक्षा (समन्वित शिक्षा) को समाज के सामान्य स्कूलों में चलाने की योजना का निर्माण किया गया।

समावेशी शिक्षा की परिभाषा

1. समावेशी शिक्षा एक प्रकार की समेकित शिक्षा (Integrated Education) की ओर इंगित करती है, जिसके अंतर्गत-विना किसी भेदभाव व अंतर के समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा प्रदान करके, एक स्तर पर लाया जा सके।
2. संयुक्त राष्ट्रसंघ, 1993 में, सभी को समान अवसर (Equalisation of opportunities) के द्वारा सभी वर्गों की शिक्षा कराने का सभी राज्यों को आवश्यक दायित्व सौंपा गया है, जिसके अंतर्गत सभी वंचित वर्ग, शारीरिक रूप से अक्षम, अंधत्व, बधिर, विकलांग, बौद्धिक स्तर पर वंचित संवेदी, मांसपेशीय अस्थिर या अन्य विकलांगता, भाषा, बोली, कामगार, जातिगत समूह, धार्मिक अल्पसंख्यक, स्त्री-पुरुष भेदभाव को दूर करके, सर्वजन के सम्पूर्ण विकास हेतु शिक्षा का प्रावधान है।

समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त

1. बालकों में एक-सो अधिगम की प्रवृत्ति है।
2. बालकों को समान शिक्षा का अधिकार है।
3. सभी राज्यों का यह दायित्व है कि वह सभी वर्गों के लिए यथोचित संसाधन, सामग्री धन तथा सभी संसाधन उठाकर स्कूलों के माध्यम से उनकी गुणवत्ता में सुधार करके आगे बढ़ायें।
4. शिक्षण में सभी वर्गों, शिक्षक, परिवार तथा समाज का दायित्व है कि समावेशी शिक्षा में अपेक्षित सहयोग करें।

समेकित शिक्षा की आवश्यकता तथा चुनौतियाँ

शरीर की विभिन्न मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ शिक्षा भी जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शिक्षा व्यक्ति में उपस्थित विभिन्न योग्यताओं तथा क्षमताओं का विकास कर उसमें समाज से समायोजन की योग्यता को विकसित करती है। व्यक्ति को विभिन्न कौशल प्रदान करने स्वावलम्बन की दिशा में प्रेरित करते हुए समाजोपयोगी बनाती है।

कारण

- उपागम्यता** : सामान्य बालकों तथा असामान्य बालकों को समेकित शिक्षा द्वारा शिक्षित करने की आवश्यकता है। यह इसका सर्वप्रथम कारण है। विभिन्न योग्यता वाले बालकों हेतु उनकी संख्यानुसार घर के पास ही विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना अत्यन्त कठिन कार्य है। एक ओर तो हम सामान्य बालकों हेतु 'पड़ोस में विद्यालय' की बात करते हैं जिसके तहत प्राथमिक विद्यालय तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय बालक के घर से अधिकतम 1 किमी. तथा 3 किमी. की दूरी पर होने चाहिए।
- असंवेदनशीलता** : समेकित शिक्षा की दूसरी सबसे बड़ी चुनौती है, असंवेदनशीलता। समाज, परिवार, अध्यापकों तथा मित्रों की संवेदनहीनता तथा नकारात्मक अभिवृत्ति के फलस्वरूप विशिष्ट बालक, अवरूढ़ विकास तथा दिशाहीन जीवन का शिकार हो रहे हैं। बालक में शैक्षिक योग्यता होने पर भी उनका परिवार बालक को विद्यालय भेजने में रुचि नहीं रखता। बालक को बोझ समझ चिन्ता व दयादृष्टि से देखा जाता है। समेकित शिक्षा के अन्तर्गत परिवार, अध्यापक एवं सम्पूर्ण समाज में सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न करने का प्रयास समाहित है।
- समस्याओं के निराकरण की अपेक्षा** : समाज में जानकारी का अभाव उपरोक्त समस्याओं में वृद्धि करता है। यह तीसरा सबसे महत्वपूर्ण कारण, विभिन्न योग्यता वाले बालकों की समस्याओं के निराकरण की अपेक्षा स्थूणता ही उत्पन्न करता है। सम्बन्धित ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की नितान्त आवश्यकता है।

समेकित शिक्षा के उद्देश्य

किसी भी कार्य की सफलता हेतु सर्वप्रथम पद है- उद्देश्यों का निर्धारण तथा उद्देश्यों में समयानुसार परिवर्तन। समेकित शिक्षा के उद्देश्य निम्न हो सकते हैं-

- बच्चे को शिक्षा की मुख्यधारा से अलग किए बिना उसकी आंतरिक क्षमताओं को उभार, अपनी शक्ति का अधिकतम उपयोग करने की योग्यता विकसित करना।
- बालक के विकास के लिए सहायक वातावरण उपलब्ध कराना।
- बालकों में दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल का विकास।
- बालकों में समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उचित समायोजन।
- समाज का बालकों के प्रति संवेदनशीलता का विकास।
- सीखने की प्रकृति का विकास।
- बालकों में नवजीवन का संचार।
- समग्र जीवन में उत्तम नागरिक होने के कर्तव्यों को वहन करना।
- शिक्षार्थियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना।

समावेशी शिक्षा के मुख्य विषय

समावेशी शिक्षा प्रणाली सभी वर्गों, विशेष रूप से वंचित वर्ग पर केंद्रित है, जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग (आँख, कान, नाक, स्वर प्रणाली, चलने या लिखने, पढ़ने की विकलांगता) मानसिक रूप से दुर्बलता, जैसे आदिम, मंद बुद्धि या गतिमक पॉलीसी (सेरिबल पॉलीसी), संवेदी पेशीय तथा अस्थि शीघ्रता (Neuro musculo skeletal) संवेदी विकासात्मक बाल-मजदूर, गली-नुकड़ के बालक तथा अन्य कारणों, जैसे स्त्री-पुरुष विभेद,

जाति-रंग, समुहात्मक कारणों से बच्चों को विशेष रूप से लक्षित किया गया है। इसकी शिक्षा समस्त सुविधाओं से संपन्न बनाकर, सभी को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्रदान करना है।

समावेशी शिक्षा योजना की प्रासंगिकता निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है-

1. अधिकांश छात्रों को विकलांगता के कारण शिक्षा के अवसर नहीं मिल पाते।
2. संविधान के 93 वें संशोधन के अनुसार भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के बालकों को निःशुल्क शिक्षा का अधिकार प्राप्त है।
3. समावेशी शिक्षा योजना (I.E.S.) द्वारा 2015 तक सर्वशिक्षा अभियान के तहत पूर्णतया साक्षर बनाना है।
4. राज्य सरकार को शिक्षा में विशेष बालकों के लिए एक निश्चित आवश्यकता वचनबद्धता है।
5. विकलांगता से सम्बद्ध, पी. डब्ल्यू. डी. एक्ट-1995 के अनुसार, 18 वर्ष तक की आयु तक सभी विशेष बालकों को सरकार को ओर से समस्त सुविधाएँ प्रदान करके, शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है।
6. राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद्-2000 के स्कूली शिक्षा के विषयानुसार (N.C.F. for School Education) द्वारा सभी विकलांगों को अधिगम-सहायक समावेशी शिक्षा प्रदान करने की संस्तुति की गई है।
7. समावेशी शिक्षा योजना (I.E.S.) द्वारा प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान करना है।

अधिगम अक्षमता

अधिगम नियोग्य बालक से अधिप्राय :

'अधिगम नियोग्य' शब्द से अधिप्राय उन दशाओं से होता है, जो मस्तिक का सुचारु रूप से कार्य करने में असमर्थ होने, किसी के द्वारा बोली गयी बात को समझने में अक्षम होने, बोलने में असमर्थ होने, लिखने में असमर्थ होने, शब्दों को ठीक प्रकार से ना देख पाने के कारण, पढ़ने में असमर्थ होने, बोलने में असमर्थ होने, लिखने में असमर्थ होने, गणितीय संख्याओं में कठिनाई होने से सम्बन्धित है। ऐसा बालक जो उपरोक्त दशाओं में किसी एक या एक से अधिक कारणों से अधिगम में परेशानी का सामना करता है या पूरी तरह से अक्षम है, तो उसे अधिगम नियोग्य बालक कहा जा सकता है।

अधिगम नियोग्य बालक क्षेत्र का सर्वप्रथम उपयोग सैमुअल कर्क ने 1962 में किया, जो आज सर्वमान्य है।

हैमिल, लेथ मैकन्ट व लारसन ने अधिगम नियोग्यता को इस प्रकार परिभाषित किया-

अधिगम नियोग्यता एक ऐसा मूल शब्द है जो एक ऐसे समूह को असमान रूप से श्रावण, वाचन, अध्ययन, लेखन, तर्क गणितीय जैसी योग्यताओं में सार्थक रूप से कठिनाई का अनुभव करते हैं। ये कठिनाइयाँ किसी भी व्यक्ति को आन्तरिक होती हैं जो केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के विकृत क्रिया के परिणामस्वरूप घटित होती है।

यद्यपि अधिगम नियोग्यता असामान्य परिस्थितियों (जैसे संवेदी तंत्र को क्षतिग्रस्तता, मानसिक विकलांगता, सामाजिक व सांवेगिक क्रियाओं के व्यवधान का वातावरणीय प्रभाव के कारणों के परिणामस्वरूप हो सकती है, परन्तु यह भी आवश्यक शर्त है कि अधिगम नियोग्यता इन कारणों से प्रत्यक्ष प्रभाव के कारण नहीं है।

(नेशनल ज्वइण्ट कमेटी फॉर लर्निंग डिसेबिलिटी, 1981)

अधिगम नियोग्य बालकों की विशेषताएँ :

कलीमेण्ट, 1966 ने अधिगम नियोग्यताओं से सम्बन्धित 99 विशेषताओं की सूची प्रस्तुत की। इनमें से 9 विशेषताएँ ऐसी पायी गयीं जो अधिगम नियोग्यताओं में अवश्य हो पायी जाती हैं, ये इस प्रकार हैं-

- अतिसक्रियता
- प्रात्यक्षिक गतिक स्थिरता
- सांवेगिक अस्थिरता
- सामान्य समन्वय का अभाव
- प्रोत्साहन की कमी
- स्मृति एवं चिन्तन व्यवधानित
- विशिष्ट शैक्षिक समस्याएँ
- अध्ययन समस्या
- विद्युत तरंगों में असमरूपता

अधिगम निर्योग्यता का वर्गीकरण

शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की अधिगम निर्योग्यता का अध्ययन किया जाता है। जैसे-

अधिगम निर्योग्यता



विशिष्ट बालक

विशिष्ट बालक वे बालक होते हैं जो सामान्य न होकर सामान्य से भिन्न होते हैं। सामान्य बालक की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- औसत शरीर वाले स्वस्थ होते हैं।
- सामान्य शारीरिक श्रम वाले कार्य सरलता से करते हैं।
- बुद्धि-लब्धि 90 से 110 सीमा के मध्य होते हैं।
- शैक्षिक उपलब्धि औसत होती है।
- सीखने की गति औसत ही होती है।
- शिक्षक दिये गये कार्य को लगन के साथ करता है।
- संवेगात्मक रूप से संतुलित होते हैं।
- समाज व विद्यालय में उत्तम समायोजन रहता है।

विशिष्ट बालक

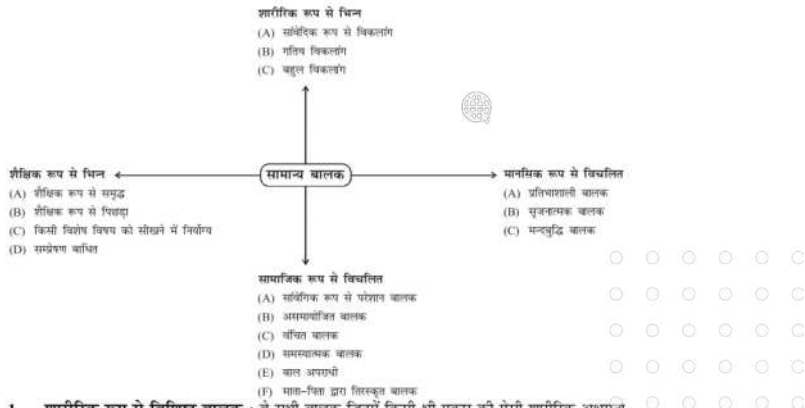
क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, "विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट पद किसी गुण या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण वह व्यक्ति साधारणों का ध्यान अपनी ओर विशिष्ट रूप से आकृष्ट करता है, इससे उसके व्यवहार की अनुकूलताएँ भी प्रभावित होती हैं।"

एस. ए. किर्क, "एक विशिष्ट बालक वह है जो कि शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विशेषताओं में किसी सामान्य बालक से उस सीमा तक विचलित होता है जब वह अपनी क्षमताओं के अधिकतम विकास हेतु सहायता, निर्देशन, विद्यालयी कार्यक्रमों में परिमार्जन तथा विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता रखता है।"

विशिष्टता किसी भी जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म, राष्ट्र आदि के व्यक्तियों में पाई जा सकती है। यह विशिष्टता वंशाणुगत या वातावरण, जन्म एवं कभी-कभी दोनों के संयोजन का परिणाम होती है।

विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण

विभिन्न विद्वानों ने विशिष्ट बालकों को उनकी विशिष्टता की प्रकृति विस्तार क्षेत्र के आधार पर अलग-अलग तरह से वर्गीकृत किया है। इसे निम्न चार वर्गों में बांटा जा सकता है:



- 1. शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक :** वे सभी बालक जिनमें किसी भी प्रकार की ऐसी शारीरिक अक्षमता एवं अयोग्यताएँ होती हैं, जिनके कारण वे सामान्य बालकों के समान प्रचलित शिक्षण विधियों व पाठ्यक्रम से लाभान्वित नहीं होते। इन्हें शिक्षित व स्वावलम्बी बनाने हेतु विशेष प्रविधियों व सहायक यंत्रों के उपयोग से शिक्षा देने व निर्देशन प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

इन्हें तीन उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

 - (A) सांवेदिक रूप से विकलंग (Sensory Disabled) :** जन्मांध, कमजोर दृष्टि वाले, बहरे, ऊँचा सुनने वाले, श्रावण दोष, दूर से बोलना व गूँगे आदि।
 - (B) गति विकलंग बालक (Child with Motor Disabilities) :** शरीर के किसी अंग को पोलियो, लकवा, रक्तचाप अनियमित, लम्बी बीमारी या दुर्घटना के कारण पूर्ण या आंशिक क्षति को कि बालक के प्रभावित अंग को गति को अनियमित या नियन्त्रित कर देती है।
 - (C) बहुल विकलंग :** एक से अधिक शारीरिक निर्योयताओं से ग्रस्त होना, जैसे-सेरिक्ल पालसी, मिरगी, पैराएलैजिया आदि रोगों से ग्रस्त।
- 2. मानसिक रूप से विशिष्ट बालक :** असामान्य बौद्धिक क्षमताओं वाले सभी बालकों को इस वर्ग में सम्मिलित करते हैं। बौद्धिक असामान्यता धनात्मक-ऋणात्मक, दोनों प्रकार की हो सकती है, ये इस प्रकार हैं-

 - (A) प्रतिभाशाली बालक (Gifted Child) :** धनात्मक बौद्धिक असामान्यता वाले बालकों को प्रतिभाशाली बालक कहा जाता है, ये बालक विलक्षण बुद्धि या उच्चस्तरीय उपलब्धि रखते हैं। इनकी I.Q. बुद्धि-लब्धि 120 से अधिक होती है।
 - (B) सृजनात्मक बालक (Creative Child) :** सृजनात्मक बालक से अभिप्राय नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की क्षमता रखने वाले बालक से है। सृजनात्मक बालक प्रतिभाशाली भी हो, यह आवश्यक नहीं। औसत बौद्धिक क्षमता वाले बालक सृजनात्मक बालक होते हैं।
 - (C) मंद बुद्धि बालक :** इनकी बुद्धि-लब्धि औसत से कम होती है। इनमें से कुछ को तो सामान्य कक्षाओं में विशेष शिक्षण विधियों द्वारा पढ़ाकर स्वयं व समाज के लिये शिक्षित किया जा सकता है, किन्तु कुछ इतने मंदबुद्धि होते हैं कि उन्हें किसी भी कार्य के लिये प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता।

3. **शैक्षिक रूप से विशिष्ट बालक** : ये वे बालक होते हैं जो शैक्षिक निष्पादन व योग्यता में सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं, उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-
 - (A) **शैक्षिक रूप से समृद्ध बालक** : इन बालकों का शैक्षिक स्तर सामान्य बालकों की तुलना में काफी अच्छा होता है। इनमें सीखने की ग्राह्यता, समझ व दृष्टियों का समन्वय उच्च स्तरीय होता है।
 - (B) **शैक्षिक रूप से पिछड़ापन** : वे बालक जो अपने उच्च वर्ग के बालकों से शैक्षिक उपलब्धि में 1 या 2 वर्ष पिछड़े हुए होते हैं।
 - (C) **किसी विशेष विषय में सीखने की निर्योग्यता रखने वाला बालक** : ये बालक किसी विषय विशेष को सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
 - (D) **सम्प्रेषण बाधित बालक** : ऐसे बालक वे होते हैं जो दूसरों की बताई बात को ना तो स्वयं समझ पाते हैं, न ही स्वयं की बात किसी को समझा पाते हैं।
4. **सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक** : ये बालक इस वर्ग में आते हैं जिनका समाज में समायोजन उचित प्रकार से नहीं होता है। ये बालक अपनी किसी व्यक्तिगत समस्या व्यवहार या अपनी अवैगिक स्थिति के कारण सामाजिक रूप से विचलित हो जाते हैं। इन्हें निम्न वर्गों में बांट सकते हैं-
 - (A) **संवैगिक रूप से विचलित** : ये बालक परिवार के सदस्यों, साथियों व अध्यापकों के पक्षपाती व हताशाहित करने वाले व्यवहार के कारण संवैगिक रूप से विचलित हो जाते हैं।
 - (B) **असमायोजित बालक** : ये बालक किन्हीं असमानताओं व समस्याओं के कारण समाज, परिवार व साथियों में समायोजित नहीं हो पाते हैं।
 - (C) **वंचित बालक** : वंचन की स्थिति बालकों में सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विषमताओं के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। इसके अन्तर्गत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चे, जो कि निम्न सामाजिक व आर्थिक स्थिति होने के कारण अपनी योग्यताओं का विकास नहीं कर पाते, आते हैं।
 - (D) **समस्यात्मक बालक** : ये बालक बचपन से ही उचित निर्देशन के अभाव में माता-पिता शिक्षकों व अन्य लोगों के लिये समस्या बन जाते हैं। इनका व्यवहार समस्यात्मक होता है। जैसे- चोरी करना, झगड़ा करना, झूट बोलना, बिस्तर गीला करना, स्कूल से भागना आदि।
 - (E) **बाल अपराधी** : ऐसे बालक अत्यापु से ही समाज विरोधी कार्यों, कानून की अवहेलना तथा विध्वंसकारी कार्यों के करने में संलग्न हो जाते हैं।
 - (F) **माता-पिता द्वारा तिरस्कृत बालक** : इस श्रेणी में वे बालक आते हैं जो माता-पिता द्वारा तिरस्कृत किये जाते हैं। तिरस्कार के कई कारण हो सकते हैं। जैसे- माता-पिता की आपसी लड़ाई, अधिक भाई-बहनों के कारण इत्यादि। इस प्रकार की विशिष्टता लिये हुए बालकों को स्वावलम्बी व समाजोपयोगी बनाने हेतु उचित शिक्षण विधियों, तकनीकों व यंत्रों का प्रयोग करना पड़ता है।

प्रतिभाशाली बालक (Gifted Child or Talented Child) :

प्रतिभा-सम्पन्नता एक ऐसी धनात्मक विशिष्टता है जो कि बालक के व्यक्तित्व में निहित अद्भुत योग्यताओं के कारण उसे सामान्य व अन्य प्रकार विशिष्ट बालकों से भिन्न दर्शाती है तथा उसके शीघ्र सीखने में सहायक है।

प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि-लब्धि सामान्य बालकों से अधिक होती है। इनमें प्रतिभा जन्मजात होती है।

टारेन्स के अनुसार, “ऐसे बालक जो प्रतिभाशाली एवं प्रवीण बालक कहा जाता है जो मानव व्यवहार के किसी क्षेत्र में ऐसा निष्पादन करता है, जो समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है।”

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान : प्रत्येक कक्षा या विद्यालय में प्रतिभाशाली छात्र होते हैं। इनका पता लगाना या चयन करना आसान नहीं होता, परन्तु यह अति आवश्यक है, अन्यथा बालक की प्रतिभा दबकर रह जायेगी। इनकी पहचान के लिए अध्यापक निम्न प्रविधियों प्रयोग कर सकता है-

- (A) **बुद्धि परीक्षण** : बुद्धि परीक्षण या परीक्षाओं का प्रयोग कर इनका चयन किया जा सकता है। इन बुद्धि परीक्षणों का व्यक्तिगत तौर पर या समूहों में प्रयोग किया जा सकता है।
- (B) **उपलब्धि परीक्षाएँ** : उपलब्धि परीक्षाओं द्वारा भी प्रतिभावान बालकों को पहचाना जा सकता है। इस प्रकार बालकों की उपलब्धियों का ज्ञान भली-भाँति हो जाता है। उच्च स्तर की उपलब्धि बालकों के प्रतिभावान होने की आशा जागृत करती है।
- (C) **अभिरुचि परीक्षाएँ** : अभिरुचि से विद्यार्थियों के भविष्य की सफलता के बारे में अनुमान लगा सकते हैं क्योंकि अभिरुचियों किसी एक विशेष योग्यता से सम्बन्धित होती हैं।

सम्बन्धित व्यक्तियों से सूचनाएँ : प्रतिभाशाली बालकों के बारे में, अध्यापक, पुस्तकालयाध्यक्ष आदि व्यक्तियों से भी सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं।

डी हॉन व कफ की सूची : डी हॉन व कफ की प्रतिभाशाली बालकों के विशेषताओं को एक सूची तैयार की, जिसके द्वारा प्रतिभाशाली बालकों को पहचाना जा सकता है—

1. ये स्पष्ट रूप से सोचने, अर्थों को समझने और सम्बन्धों को पहचानने में श्रेष्ठ होते हैं।
2. बिना रुटकर समझने में दिखाना।
3. शब्द-ज्ञान विस्तृत होता है।
4. मौलिक चिन्तन कर सकते हैं।
5. सामान्य बुद्धि का प्रयोग अधिक करता है।

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ

प्रतिभाशाली बालक गुण व व्यवहार में सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं। नवीनतम अनुसंधानों ने सिद्ध किया है कि ये बालक औसत प्रतिभा वाले, सामान्य बुद्धि-लब्धि वाले बालकों से ऊँचाई, स्वास्थ्य व शारीरिक संरचना आदि में उच्च होते हैं। ये जल्दी बोलना, चलना, बहुत प्रश्न पूछना, स्वास्थ्य व शारीरिक संरचना में उच्च होते हैं। इनकी विशेषताएँ निम्न हैं—

1. शारीरिक विशेषताएँ—

1. शारीरिक विकास तीव्रगति से होता है
2. उत्तम शरीर वाले
3. सामान्य बालकों से भार, ऊँचाई व शक्ति में अधिक
4. जल्दी चलना व बोलना सीखते हैं
5. ज्ञानेन्द्रिय विकास भी उत्तम व शीघ्र
6. किशोरावस्था के लक्षण शीघ्र उत्पन्न।

2. मानसिक व बौद्धिक विशेषताएँ—

1. व्यवस्था, विश्लेषण, स्मरण, संश्लेषण व तर्क की विशेष योग्यता
2. सीखने व समझने की असाधारण गति
3. अमूर्त तथ्यों को समझने की क्षमता
4. शब्दकोश विस्तृत व वाक्पटु
5. मौलिक चिन्तन, सूक्ष्म व सटीक निरीक्षण शक्ति
6. सामान्यतः विज्ञान व गणित में दक्ष
7. उच्च बुद्धि-लब्धि
8. उच्च सामान्य ज्ञान

3. शैक्षिक विशेषताएँ—

1. विद्यालय में नियमित उपस्थिति
2. संदेह गृहकार्य करना

3. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तकें पढ़ने में रुचि
4. कक्षा में सर्वाधिक अंक पाना
5. अन्य प्रतिभाशाली बालकों से प्रतिस्पर्धा रखना
6. कम परिश्रम करके अच्छे अंक लाना।

4. व्यक्तिगत सम्बन्धी विशेषताएँ-



1. समायोजन की श्रेष्ठ क्षमता
2. योजना निर्माण की उत्तम क्षमता
3. प्रभावशाली व्यक्तित्व
4. उत्तम चरित्र
5. शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता
6. हास-परिहास में भाग लेना
7. आत्म-विश्वासी, स्वतंत्र विचार धार
8. प्रश्न पूछने में निपुण
9. प्रत्येक कार्य को जिम्मेदारी से पूरा करना।

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

5. सामाजिक विशेषताएँ-

1. दूसरों का सम्मान करना
2. विनम्र व आज्ञाकारी
3. निष्कपटता व सामाजिक कार्यों को करने को तत्परता
4. लोकप्रिय व्यक्तित्व
5. नेतृत्व की विशेष योग्यता।

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

नकारात्मक विशेषताएँ

प्रतिभाशाली बालकों को उनकी प्रतिभा का उचित संपोषण व उपयोग ना होने पर तथा उपेक्षा के कारण अक्सर ये नकारात्मक विशेषताएँ विकसित हो जाती हैं, जैसे-

- अधीरता
- कभी-कभी समूह से पृथक् एकाकी रहना।
- ईर्ष्यालु एवं स्वार्थपूर्ण व्यवहार करना।
- लापरवाह व दोषपूर्ण लेखनी।
- हठ करना व आवश्यकता से अधिक बोलना।

प्रतिभाशाली बालक व शिक्षा

इन बालकों की शिक्षा जटिल व दुरुह कार्य है। इनकी शिक्षा हेतु मुख्य रूप से 3 प्रणालियाँ अपनाई जाती हैं।

1. प्रभावक व उपयुक्त शिक्षा

- (A) निर्धारित आयु से पूर्व ही विद्यालय में प्रवेश
- (B) उसकी बौद्धिक एवं शैक्षिक योग्यताओं के आधार पर एक ही वर्ष में दो या दो से अधिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अध्ययन।
- (C) सामान्य से कम समय एवं आयु में किसी भी पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण कर सकने की अनुमति।

2. संवर्धित पाठ्यक्रम : इस प्रकार से बालकों को अतिरिक्त व संवर्धित पाठ्यक्रम का प्रावधान निम्न रूपों में किया जा सकता है-

- (A) व्यक्तिगत संवर्धित : अतिरिक्त पाठ्यवस्तु का नियोजन करें कि कोई भी प्रतिभाशाली छात्र उसे व्यक्तिगत रूप से लगभग आत्मनिर्भर होकर पूर्ण कर सके।

(B) सामूहिक संवर्धिता : निर्धारित कार्य सामग्री समूह प्रक्रिया के माध्यम से पूर्ण करने में सक्षम हों।

- अतिरिक्त पठन व लेखन कार्य देना
- अतिरिक्त कौशल व कलाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना
- उच्च लक्ष्यों का निर्धारण
- नई योजनाएँ प्रस्तुत की जायें
- नवीन व विविध शिक्षण पद्धतियाँ



3. विशेष कक्षाएँ व विद्यालय : प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा के लिए विशेष विद्यालयों व कक्षाओं की व्यवस्था के बारे में विद्वान एकमत नहीं हैं। परन्तु विद्यालयों में प्रतिभाशाली बालकों के लिये अलग कक्षा विस्तृत पाठ्यक्रम, प्रयोगशाला कार्य व प्रतिभा सम्पन्न अध्यापकों से युक्त होती है।

इसके अलावा ऐसे विद्यालय हों जो केवल प्रतिभाशाली बालकों के लिये होते हैं, वहाँ विशेष रूप से प्रतिभाशाली बालकों की आवश्यकताओं व योग्यताओं के अनुरूप शिक्षण होता है।

4. त्वरण प्रक्रिया : इस व्यवस्था में प्रतिभाशाली छात्र को एक सत्र के मध्य में ही एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में यथारोप त्वरित कर दिया जाता है।

सृजनात्मक बालक (Creative Child)

सृजनात्मकता व्यक्ति का मौलिक गुण है। प्रत्येक प्राणी में यह गुण किसी न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है। प्रत्येक देश व समाज में ऐसे व्यक्ति पाये जाते हैं, ये राष्ट्रीय विकास में अपूर्व योगदान देते हैं।

वेबस्टर (Webster) शब्दकोष के अनुसार क्रियेटिविटी शब्द 'करे' Kere बना है जिसका अभिप्राय 'अस्तित्व में आना' उगना, (grow) है। वेबस्टर शब्दकोष में Creat जब एक क्रिया के रूप में प्रयोग होता है तो उसका अर्थ बनाना, अस्तित्व में आना होता है।

सृजनात्मक का अर्थ स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वान इस प्रकार कहते हैं-

जेम्स डेवर का कथन - सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना व उत्पादन में होती है।

क्रो और क्रो के अनुसार - सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।

सृजनात्मक बालक - सृजनात्मक बालक को परिभाषित करते हुए बैरन (Barron) कहते हैं "सृजनात्मक बालक पहले से विद्यमान वस्तुओं तथा तत्त्वों को संयुक्त कर नवीन निर्माण करता है।"

इसरेली, एन.-सृजनात्मक बालक किसी नवीन वस्तु का निर्माण व उसमें परिवर्तन करने की क्षमता रखता है।

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि बालक द्वारा किसी जटिल समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान करने की योग्यता सृजनात्मकता है, जो अपने में निहित विभिन्न विशेषताओं समस्या के प्रति सजगता, लचीलापन, मौलिकता, गतिशील वैचारिकता, जिज्ञासा, नवीनता हेतु परिवर्तन की आकांक्षा के माध्यम से रचनात्मकता उत्पन्न करती है।

सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ

मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार होती हैं-

- विचारों में लचीलापन, विस्तृत बौद्धिक स्तर
- समस्या समाधान योग्यता
- प्रतिकूल वस्तुओं को सहन करने की क्षमता
- बालकों में विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने की क्षमता होती है
- जीवन की अनिश्चितता व कठिनाता को स्वीकार करने की इच्छा, कठिनाइयों को चुनौती के रूप में स्वीकारते हैं
- गलतियों को सहन करने की क्षमता
- न अधिक सामाजिक होते हैं, न ही समाज विरोधी

- सामाजिक परिवेश में बहुत अधिक संवेदनशील
- मस्तिष्क स्वस्थ, चिन्ता का स्तर निम्न
- प्रत्यय साधारण बालकों की तुलना में अधिक सार्थक व अर्थपूर्ण
- अपनी आयु से ज्यादा परिपक्व
- वास्तविकता व सत्यता की खोज पर बल
- तुलनात्मक रूप से अधिक उत्तरदायित्व की भावना वाले, ईमानदार व विश्वसनीय
- औसत श्रेणी के शारीरिक स्वास्थ्य वाले, कल्पनाशील।



सृजनात्मकता का पता लगाने हेतु परीक्षण

सृजनात्मकता के क्षेत्र में बहुत से परीक्षण विकसित हुए हैं। ये प्रचलित मुख्य परीक्षण इस प्रकार हैं-

1. पासो का सृजनात्मक परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
2. बाकर मेंहदी : सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
3. बाकर मेंहदी : सृजनात्मक चिन्तन का अशाब्दिक परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
4. कं. एन. शर्मा : अपसारी उत्पादन योग्यता परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
5. वी.पी. शर्मा व जे.पी. शुक्ला : वैज्ञानिक सृजनात्मकता का शाब्दिक परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
6. एस.पी. मल्होत्रा व सुचेता कुमारी : भाषा सृजनात्मकता परीक्षण ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

सृजनात्मक बालकों की शिक्षा

टॉरेन्स ने अपने अध्ययन के आधार पर शिक्षकों के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव बताये-

1. बालकों द्वारा पूछे प्रश्नों का उत्तर आदरभाव से दें।
 2. उनके कल्पनात्मक व असाधारण विचारों को समझने का प्रयास करें।
 3. छात्रों की स्वक्रिया पर बल दें व उन्हें स्वक्रिया हेतु प्रोत्साहित करें।
 4. बालकों के विचारों को महत्व दें।
 5. स्वतः प्रेरित अधिगम व उसके मूल्यांकन पर बल दें।
 6. उपयुक्त वातावरण के प्रति विशेष ध्यान दें जिससे उनमें सृजनात्मकता विकसित हो।
 7. विद्यालय में समय-समय पर आमप्रेरणा पुरस्कार व प्रतियोगिता आदि सम्मन की जाये।
 8. अनेक माध्यमों द्वारा अपसरण उत्पादन (Divergent Production) को प्रोत्साहित किया जाये।
 9. सेमीनार, संगोष्ठी, वाद-विवाद सभायें, प्रदर्शनी, सरस्वती यात्राओं का आयोजन।
 10. पाठ्यपुस्तकों की व्यवस्था बुलेटिन बोर्ड, विद्यालय पत्रिका, कक्षा पुस्तकालयों की व्यवस्था की जाये।
- बालक की सृजनात्मक योग्यता को विकसित करना शिक्षकों, समाज व देश का परम कर्तव्य है। इसलिए इस प्रकार के बालकों की शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करें।

पिछड़े बालक

विशिष्ट बालकों में एक वर्ग पिछड़े बालकों का भी होता है। पिछड़े बालक को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गई हैं-

सीरिल बर्ट ने अपनी पुस्तक 'दी बैकवर्ड चाइल्ड' में कहा है-

“पिछड़ा हुआ बालक वह है जो खुद के जीवन के मध्य में अपनी आयु स्तर का कक्षा से एक नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ है-”

बर्ट के अनुसार, ऐसे बालक जिनकी 85 से कम शैक्षणिक उपलब्धि E.Q. है, वे पिछड़े होते हैं। शैक्षणिक लब्धि को जानने का सूत्र निम्नलिखित है-

$$E.Q. = \frac{E.A.}{C.A.} \times 100$$

यहां E.Q. = Educational Quotient (शैक्षणिक लब्धि)

E.A. = Educational Age (शैक्षणिक आयु)

C.A. = Chronological Age (वास्तविक आयु)

पिछड़े बालकों के प्रकार

1. **शारीरिक दोष के कारण पिछड़े हुए बालक** : इनकी ज्ञानेन्द्रियाँ ठीक से कार्य नहीं करतीं जैसे- आँख की कमजोरी, बहुरूपन, ऊँचा सुनना, हकलाना आदि शारीरिक दुष्टि से पिछड़ेपन के दोष हैं।
2. **मानसिक दुष्टि से पिछड़े बालक** : इनकी I.Q. बुद्धि-लब्धि 60 से कम होती है। इसके अन्तर्गत मन्दमूढ़ व जड़बुद्धि बालक आते हैं।
3. **संवेगात्मक दुष्टि से पिछड़े बालक** : माता-पिता, शिक्षकों, व मित्रों से स्नेह व सहानुभूति न मिलकर तिरस्कार मिलता है। अतः बालक में चिन्ता, तनाव, निराशा व उदासीनता दिखाई देती है।
4. **शिक्षा के अभाव में पिछड़े बालक** : सामान्य बुद्धि के होते हुए भी कुछ कारणों से विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, इनका पढ़ाई का कार्य असुविधाजनक व अभाव के कारण पिछड़ जाता है।
5. **वातावरण और परिस्थितियों के कारण पिछड़ापन** : कुछ बालक आर्थिक स्थिति, सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण ठीक न होने के कारण सामान्य बुद्धि स्तर के बने होने के बावजूद भी पिछड़ जाते हैं।

पिछड़े बालकों की विशेषताएँ

पिछड़े बालकों की प्रमुख विशेषताएँ हैं-

1. पिछड़े बालक मन्दगति से सीखते हैं। इनका अधिगम तीव्र व शीघ्र नहीं होता।
2. अपनी उम्र के वर्ग के बच्चों से शैक्षिक क्षेत्र में काफी पिछड़े हुए होते हैं। एक ही कक्षा में कई साल भी लगा देते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इस दोष को प्रवाह विहीन (Stagnation) कहा जाता है जिसके कई अन्य कारण और होते हैं।
3. पिछड़ेपन व बुद्धि-लब्धि में सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं। पिछड़े बालकों का अर्थ स्पष्ट करते हुए बुद्धि-लब्धि (I.Q.) शब्द का प्रयोग नहीं होता, केवल शैक्षणिक लब्धि (E.Q.) का प्रयोग होता है।
4. इन बालकों का ध्यान व रुचि थोड़े समय के लिए बनी रहती है।
5. शैक्षणिक व सामाजिक क्रिया-कलापों में भाग लेने के लिए अपने आप को समर्थ नहीं पाते।
6. समस्या पर सूक्ष्म रूप में विचार नहीं कर सकते।
7. साधारण-सी बातों व नियमों को भी समझ नहीं पाते।
8. वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं कर पाते।
9. अन्तर्मुखी होते हैं, मित्र कम होते हैं।
10. दूरदर्शिता की कमी होती है।
11. समाज के स्वयं के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण नहीं अपनाते।
12. निराशावादी होते हैं।

पिछड़े बालकों की शिक्षा

पिछड़े बालकों के लिए शिक्षकों, अभिभावकों, समाजसेवकों तथा विद्यालय, चर्चित्सकों को मिलकर एक साथ काम करना चाहिए ताकि पिछड़ेपन के कारणों की खोज कर उन बालकों के लिए उचित उपचारों का प्रयोग किया जा सके। इनकी उपचार व शिक्षा हेतु निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. **उपचार** : दोषों व रोगों का उपचार, कम सुनाई व दिखाई देता हो तो, कक्षा में आगे बैठायें।
2. **आर्थिक सहायता** : निर्धन परिवारों के छात्रों हेतु छात्रवृत्ति व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करें।
3. **हस्त उद्योग** : शैक्षणिक तौर पर पीछे रहने के कारण उच्च शिक्षा पाने में असमर्थ रहते हैं, अतः हस्त उद्योगों का प्रशिक्षण दें ताकि व्यवसाय प्रारम्भ कर सकें।

4. **विशेष पाठ्यक्रम :** पाठ्यक्रम में विषय सरल, सरस व रुचि के अनुसार हो, पाठ्यक्रम अधिक लचीला जीवनोपयोगी व व्यावसायिक उद्देश्यपूर्ण करें।
5. **विशेष शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग :**
 - सरस, रुचिकर शिक्षण विधियों का प्रयोग।
 - दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग।
 - पढ़ाने की गति धीमी व कम पाठ्य-चस्तु एक बार में पढ़ाई जाये।
 - मौखिक शिक्षण विधि का प्रयोग कम।
 - अर्जित ज्ञान का अभ्यास बार-बार कराएँ।
 - सरस्वती यात्राओं पर बल।
6. **निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था :** स्कूलों में निर्देशन सेवाओं का गठन हो। शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था। इसके द्वारा शैक्षिक व व्यावसायिक समस्याओं का समाधान कर सामान्य बालकों की पौष्टिकता में शामिल किया जा सकता है।
7. **विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना :** इस प्रकार के विद्यालयों में उन्हें अपनी बुद्धियों का ज्ञान नहीं हो पाता तथा उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।
8. **विशिष्ट कक्षाओं की स्थापना :** विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना न हो पाये तो विशिष्ट कक्षाओं की व्यवस्था होनी चाहिए। जहाँ अध्यापक इन बालकों के शिक्षण पर विशेष ध्यान दें।
9. **व्यक्तिगत ध्यान :** अध्यापक व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण करें। इसके लिए छात्रों को संख्या कक्षा में कम होनी चाहिए।
10. **स्कूल से भागने की प्रवृत्ति को रोकना :** अरुचि व असफलता के कारण पिछड़े बालक स्कूल से भागना प्रारम्भ कर देते हैं। उन्हें उचित राह पर लाकर इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण करें।

मन्द बुद्धि बालक (Mentally Retarded Children)

शैक्षिक दृष्टि से मन्दबुद्धि बालक का अर्थ है वह बालक जिसमें सूझ, क्षमता व ध्यान केन्द्रण क्षमता सामान्य बालक से कम हो। **टर्मेन** के अनुसार, 70 से कम बुद्धि-लब्धि वाले मानसिक रूप से विकलांग कहलाते हैं। अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफीसियेन्सी (AAMD) ने मानसिक रूप से मंदित बालक की परिभाषा इस प्रकार दी है—
 “मानसिक मंदन मुख्य रूप से औसत से कम बौद्धिक कार्य निष्पादन का संकेत देती है, जो कि अनुकूलन व्यवहार सम्बन्धी दोषों के साथ-साथ ही पाई जाती है, जो कि विकास काल के समय स्फुट होती है।

मन्द बुद्धि बालकों की विशेषताएँ

मन्दबुद्धि बालकों की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं—

1. **बौद्धिक न्यूनता :**
 - निम्न शैक्षिक स्तर
 - बुद्धि-लब्धि 70 से कम
 - अधिक बिस्मरण, दूसरों की सहायता की अपेक्षा
2. **अनियंत्रित मानसिक क्रियाएँ**
 - मानसिक क्रियाओं पर नियंत्रण नहीं
 - अवधान को केन्द्रित नहीं करना
 - सीमित शब्द-भण्डार

3. हीन व्यक्तित्व

- अग्रभावी व्यक्तित्व
- उदासीन, खिन्नमना व शिथिल
- स्पष्ट विचार व्यक्त करने की क्षमता नहीं
- उत्तरदायित्व की पूर्ति नहीं करते



4. शैक्षिक पिछड़ापन

- सीमित मानसिक क्षमता
- शैक्षिक उपलब्धि न के बराबर
- शिक्षण कार्य कठिन
- रटने की प्रवृत्ति
- मानसिक आयु शारीरिक आयु से कम

5. सीमित प्रेरणाएँ व संवेग

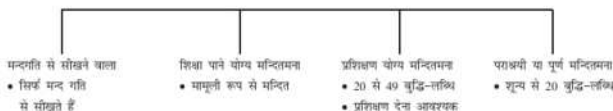
- प्रेरणाएँ साधारण व सीमित, मस्तिष्क सूझ जिज्ञासा व कल्पना-शक्ति से रहित
- संवेगों की कमी
- क्रोध, मोह व लोभ के संवेगों से वंचित

6. कुसमायोजन की स्थिति

- समायोजन निम्न स्तर का
- सामाजिक व्यवहार से अनाभिज्ञ
- उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं
- समूह में समायोजन नहीं

7. असामान्य शारीरिक रचना

- शारीरिक गठन सामान्य बालकों से भिन्न
- कद नाटा, पैर छोटे, मोटी त्वचा
- उदास चेहरा, शिथिल अंग-प्रत्यंग

मन्दबुद्धि बालकों का वर्गीकरण-**मानसिक पिछड़ेपन की रोकथाम व उपचार**

1. **पृथक्करण (Segregation) :** इस प्रक्रिया के तहत मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को सामान्य बालकों से अलग कर दिया जाये व उन्हें विशेष संस्थाओं में रखा जाये।
2. **जन्म दर पर नियंत्रण :** नसबंदी द्वारा गम्भीर रूप से मानसिक रूप से पिछड़े माता-पिता को नसबंदी कर दें ताकि मानसिक रूप से पिछड़े बालकों का जन्म ही न हो।
3. **शिक्षा योजना :** इसके अन्तर्गत निम्न बिन्दु आते हैं-

व्यक्तिगत ध्यान : ऐसे बालकों पर अध्यापक विशेष ध्यान दें, इसके लिए कक्षाओं का आकार छोटा होना आवश्यक है।

माता-पिता को शिक्षित करना : मानसिक पिछड़ेपन के लिए माता-पिता को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्हें उनके बालकों के बुद्धि स्तर से अवगत कराकर यह भी बताना चाहिए कि वे अपने बालकों के साथ कैसा व्यवहार करें।

विशेष स्कूल व अस्पताल : ऐसे बालकों के लिए विशेष स्कूलों व अस्पतालों की व्यवस्था होनी चाहिए। सामान्य स्कूलों व अस्पतालों में इनकी देखरेख व आवश्यक प्रशिक्षण संभव नहीं।

विशेष शिक्षण विधियाँ : सामान्य शिक्षण विधियाँ सफल नहीं। विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग करना आवश्यक।

विशेष पाठ्यक्रम : हस्तकला पर आधारित पाठ्यक्रम पसंद हैं। पुस्तकीय ज्ञान में ये अधिक उत्कृष्ट नहीं कर सकते, हस्तकलाओं के प्रशिक्षण से ये समाज पर बोझ नहीं बनेंगे।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि इन बालकों की शिक्षा इस प्रकार नियोजित करें कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

समस्यात्मक बालक

विद्यालय में अपने वाले कुछ बालकों का व्यवहार समस्याएँ उत्पन्न कर देता है। इनका व्यवहार सामान्य नहीं होता, इसलिए इन्हें समस्यात्मक बालक कहा जाता है।

वैलेन्टाइन ने कहा है-“समस्यात्मक बालक वे हैं जिनका व्यवहार और व्यक्तित्व किसी बात में गंभीर रूप से असाधारण होता है।”

अतएव कहा जा सकता है कि वे सभी बालक जिनके व्यवहार तथा व्यक्तित्व इस सीमा तक असामान्य होते हैं कि वे घर, विद्यालय तथा समाज में समस्याओं के जनक बन जाते हैं, समस्यात्मक बालक कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में बालकों को उचित मार्गदर्शन द्वारा ही सुधारा जा सकता है, अन्यथा यही बालक भविष्य में अपराधी व समाजद्रोही बन जाते हैं।

समस्यात्मक बालक की पहचान

उपचार व मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु समस्यात्मक बालक को सही पहचान तथा उसके व्यवहार की असामान्यता की प्रकृति व सीमा की जानकारी अत्यंत आवश्यक है। किसी भी एक परिस्थिति में बालक के व्यवहार व व्यक्तित्व का निरीक्षण करके उसकी समस्यात्मक प्रवृत्ति के विष में कोई सही व निश्चित धारणा नहीं बनाई जा सकती। अतः ऐसे बालकों की वैज्ञानिक रूप से पहचान के लिए शिक्षण की विभिन्न विधियों व तकनीकों को प्रयुक्त करना चाहिए-

1. निरीक्षण पद्धति
2. साक्षात्कार विधि
3. अभिभावकों, शिक्षकों तथा मित्रों से वार्तालाप।
4. कथात्मक-अभिलेख
5. संचयी अभिलेख
6. मनोवैज्ञानिक परीक्षण

समस्यात्मक बालक के लक्षण

इनके व्यवहारों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

(A) न्यून मानसिक दक्षता व समस्यात्मक लक्षण-

1. पैसे व अन्य वस्तुओं की चोरी करना।
2. स्कूल के कामों में सक्रिय न होना
3. शारीरिक व मानसिक कष्ट देकर आनंद लेना
4. अनुशासन का विरोध करना।
5. बुरा आचरण करना।
6. असहयोग की प्रवृत्ति रखना
7. संदेह करना।
8. धोखा देना।
9. अश्लील बातें करना।
10. विस्तर गीला करना।

(B) अत्यधिक मानसिक दक्षता का होना

1. मानसिक दृष्टि से ग्रसित होना।
2. हीन-भावना का शिकार होना।
3. सीमा से अधिक कठोर व्यवहार होना।
4. अप्रसन्न व चिड़चिड़ा होना।
5. भयभीत परन्तु आत्म-केन्द्रित।